ORIGINAL RESEARCH PAPER

Geography

"पारिस्थितिकी पर्यटन – प्रबंधन एवं महत्व" (म.प्र. राज्य के सन्दर्भ में)

KEY WORDS:

जूली खोइया शोधार्थी – भूगोल, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ. शिवराज सिंह तोमर प्राध्यापक –भूगोल, अम्बाह स्वशासी स्नातकोत्तर महावि. अम्बाह, मुरैना

परिचय –

पारिस्थितिकी पर्यटन, वास्तव में वनों को पर्यावरणीय सुरक्षा प्रदान करना है। पारिस्थितिकी पर्यटन के द्वारा ही प्राकृतिक स्थलों, भू–भाग एवं पुरातन धरोहरों जिनमें प्राचीन संस्कृति से प्राप्त संसाधन हैं, उन्हें भी संरक्षण प्राप्त होता है। देखा जाये तो यह प्राकृतिक रूप से शांत वातावरण वाले क्षेत्र होते हैं, जिनमें लोग मनोहार एवं आनन्द प्राप्त करने के लिए यात्राऐं करते हैं। पारिस्थितिकी पर्यटन एक नवीन स्वरूप है जिसमें पर्यटकों को प्राकृतिक क्षेत्रों के सुगम्य वातावरण का आनन्द लेने का अवसर प्राप्त होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग, सामाजिक एवं पारिस्थितिकी रूप से लम्बे समय तक बनाये रखने के साथ ही प्रकृति के विषय में अधिक से अधिक लोगों को शिक्षा प्रदान करता है तथा पर्यटन उद्योग में स्थानीय लोगों की भागीदारी व आजीविका के नये अवसर भी सुनिश्चित करता है।

पारिस्थितिकी पर्यटन के उद्देश्य –

पारिस्थितिकी पर्यटन के द्वारा संरक्षित वनों में वन्य प्राणियों के प्रति जनसाधारण में जागरूकता उत्पन्न करना एवं इनके संरक्षण में सहयोग प्राप्त करना है। इसके मुख्य उद्देश्य अग्रानुसार हैं –

1. पारिस्थितिकी पर्यटन के उचित प्रबंधन एवं व्यवस्था से ही लोगों के प्रवास को अधिक से अधिक आनन्द दायक एवं ज्ञानवर्धक बनाया जा सकता है।
2. पर्यटकों में प्राकृतिक संसाधनों एवं धरोहरों के संरक्षण के लिए रूचि जागृत करना एवं उनका सहयोग प्राप्त करना।
3. प्राकृतिक रहवास एवं वन्य प्राणियों पर पर्यटन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करना।
4. पारिस्थितिकी पर्यटन के द्वारा वन संसाधनों को नुकसान पहुंचाए बिना ही वनों का संसाधन के रूप में उपयोग करना।

उपकल्पना –

संरक्षित वन जो कि सरकार के आधिपत्य में होते हैं उनमें पारिस्थितिकी पर्यटन के माध्यम से लोगों को आनन्द एवं ज्ञानवर्धक वातावरण उपलब्ध कराना है।

अध्ययन विधि –

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक स्रोत के रूप में पारिस्थितिकी पर्यटनों का स्वयं द्वारा अवलोकन एवं विहार करना तथा द्वितीयक स्रोत जैसे पत्र–पत्रिकाओं, सरकारी अभिलेख, कार्य योजनाओं, इंटरनेट आदि का उपयोग किया गया है। इस शोध पत्र के माध्यम से पारिस्थितिकी पर्यटन से संबंधित विभिन्न तथ्यों को एकत्रित कर यह दर्शाने की कोशिश की गई है कि वनों को विनाश एवं हानि से बचाने के लिए इनका संरक्षण कर पर्यटन के रूप में उपयोग किया जाये। जिससे न केवल वनों की सुरक्षा होगी बल्कि इससे राजस्व की भी प्राप्ति हो सकेगी।

प्राकृतिक संसाधन और पारिस्थितिकी पर्यटन –

मध्यप्रदेश में पाये जाने वाले वनों में संरक्षित एवं खुले वन पाये जाते हैं जो कि प्रकृति द्वारा सृजित किये जाते हैं। इन वनों में प्राकृतिक संसाधनों के रूप में वन, झीलें, झरने, नदियां, भू–आकृतियां, पुरातन धरोहरें तथा पुरातात्विय स्थल विद्यमान होते हैं। इन स्थलों के एकीकृत एवं समग्र विकास के लिए प्रबंधकीय योजना में अनेक विभागों जिनमें पर्यटन, राजस्व, पुरातत्व एवं ग्रामीण विकास आदि विभागों से समन्वय स्थापित कर योगदान एवं सुझावों को सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार से उचित प्रबंधन कर पर्यटकों के लिए इन्हें आकर्षण लायक बनाकर पारिस्थितिकी पर्यटन (ईको पर्यटन) के रूप में विकसित किया जाता है।

पारिस्थितिकी पर्यटन के विकास के लिए वनों के प्राकृतिक, सुरम्य एवं ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण स्थलों जिनमें विशेष वन क्षेत्र, जलीय स्रातों में (नदी, तालाब, बांध) तथा पुरातत्व महत्व के स्थान एवं ज्यादा वन्यप्राणी वाले क्षेत्रों के विकास के लिए विभिन्न प्रकार की कार्य योजना बनाई जाती है। जो अग्रानुसार है –

1. पारिस्थितिकी पर्यटन के विकास के लिए आवश्यक है कि पर्यटन स्थल की रूपरेखा स्थल विशेष की विशेषताओं के अनुरूप हो।
2. पारिस्थितिकी पर्यटन स्थल पर आने वाले पर्यटकों की सम्भावित संख्या एवं स्थल के धारण के अनुरूप होना आवश्यक होता है।
3. पर्यटन स्थल की योजना बनाते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि वनों एंव प्राकृतिक वातावरण को कम से कम हानि हो।
4. पारिस्थितिकी पर्यटन स्थलों के विकास के लिए स्थानीय सामग्री, कला व परम्परागत सभ्यता एवं संस्कृति का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस कार्य के लिए स्थानीय लोगों का सहयोग भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है।
5. पारिस्थितिकी पर्यटन स्थलों का विकास इस प्रकार किया जाना चाहिए जिससे यह पर्यटकों के लिए शिक्षाप्रद हो तथा वातावरण को अच्छा एवं स्वच्छ रखने में मददगार सिद्ध हो।
6. पर्यटन क्षेत्रों पर पर्यटकों के लिए पर्याप्त जरूरत की सुविधाऐं विकसित हों, सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्था के साथ ही पेयजल एवं स्वच्छता का भी विशेष ध्यान रखा गया हो।

उपरोक्तानुसार कार्य योजना अथवा प्रबंधन के आधार पर हम विकसित पारिस्थितिकी पर्यटन से पर्यटकों के लिए एक अच्छा वातावरण, कम से कम व्यय और अधिकतम उपयोग हो, के साथ ही पर्यावरण को हानि न हो और संभावित नुकसान को प्रबंधित कर पारिस्थितिकी पर्यटन एवं प्राकृतिक स्थलों को सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं।

पारिस्थितिकी पर्यटन स्थलों का प्रबंधन एवं महत्व –

सरंक्षित वनों का उचित तरीके से प्रबंधन कर इसके प्राकृतिक वातावरण को सुधारा जा सकता है। जिसके लिए संबंधित वनमण्डल, वन्यप्राणी शाखा, जिला प्रशासन, पर्यटन एवं संस्कृति, जैव विविधता, जैव प्रौद्योगिकी विभाग एवं अन्य संबंधित विभागों, पर्यटकों एवं जन सामान्य से मार्गदर्शन प्राप्त कर पारिस्थितिकी पर्यटन के प्रबंधन की योजना तैयार कर उपचार किया जाता है।

1. सर्वप्रथम पारिस्थितिकी पर्यटन स्थल के विकास में आधारभूत संरचनाओं के लिए स्थल का नाम एवं उसकी भौतिक स्थिति के साथ ही भौगोलिक क्षेत्रफल और वन क्षेत्रफल का अवलोकन करना आवश्यक होता है।
2. पारिस्थितिकी पर्यटन के प्रबंधन के लिए आवश्यक है कि इसके निकटवर्ती क्षेत्रों के सभी दर्शनीय स्थलों तथा ऐतिहासिक महत्व की धरोहरों के रूप जिनमें किले, गढ़ी, प्राचीन मूर्तियां, शैल चित्र शिलालेख आदि को चिन्हित कर सूची बनाकर कार्य योजना तैयार करना चाहिए।
3. पर्यावरणीय महत्व की वनस्पतियों, वन्यप्राणी, जीव जन्तुओं, नदी, जलप्रपात, पर्वत, गुफायें, झीलों, घास के मैदानों, जीव विज्ञान से संबंधित मुख्य स्थानों, संवेदनशील स्थल आदि की सूची एवं नक्शे तैयार करना चाहिए।
4. दर्शनीय स्थलों पर प्रतिवर्ष आने वाले अंतर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय, राज्य एवं स्थानीय पर्यटकों की गणना करना चाहिए।
5. पर्यटन स्थलों पर सुगम आवागमन के लिए हवाई, रेल व टूरिस्ट बसों की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
6. रात्रि विश्राम के लिए पर्यटन स्थलों के नजदीक ही टूरिस्ट आवास , निजी होटल, धर्मशालाऐं, सरकारी विश्राम गृह आदि का उचित प्रबंध होना चाहिए।

7. दर्शनीय स्थलों एवं रूट पर मूलभूत सुविधाऐं जैसे स्वच्छ जल, खान–पान, बिजली, टेलीफोन चिकित्सा, पेट्रोल पम्प, पार्किंग के लिए उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
8. प्रशिक्षित गाईड एवं अन्य प्रशिक्षित संबंधित अमले की उपलब्धता की स्थिति का आकलन होना।
9. दार्शनिक स्थलों तक पहुंच मार्ग के लिए संकेतक बोर्ड की उचित व्यवस्था होना चाहिए।
10. स्थानीय निवासियों की आर्थिक निर्भरता कितनी है तथा किस प्रकार इनकी सहभागिता व प्रभाविता में बढ़ोतरी की जा सकती है, आदि की जानकारी संकलित करना चाहिए।
11. पर्यटकों की सुरक्षा हेतु की गयी पर्याप्त व्यवस्था का उचित आकलन करना चाहिए।
12. पर्यटन का आर्थिक , सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरण पर सीधे प्रभाव होता है। इस कारण पर्यटन एवं पर्यावरण में आपसी संतुलन बनाये रखने और पारिस्थितिकी पर्यटन प्रबंधन के लिए प्रावधान एवं उपचार प्रस्तावित करते समय इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

पारिस्थितिकी पर्यटन स्थलों पर संचालित गतिविधियां –

पारिस्थितिकी पर्यटन स्थलों का विकास मुख्यतः प्राकृतिक संसाधनों का आकलन कर संरक्षित वनों के रूप में किया जाता है। इन प्राकृतिक स्थलों का चयन कर प्रबंध योजना में शामिल कर प्रस्तावित गतिविधियों को निर्धारित कर पर्यटकों के लिए संचालित किया जाता है। ये गतिविधियां अग्रानुसार है –

ट्रेकिंग –

जंगलों के विभिन्न प्राकृतिक वासों एवं भू–आकृतिक संरचनाओं को नजदीक से देखने एवं समझने तथा वन्य प्राणियों के रहवास आदि को जानने वाली गतिविधियों में ट्रेकिंग एक महत्वपूर्ण क्रियाकलाप है। जो कि 05 से 20 कि. मी. तक लम्बे होते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों के समय जंगलों में होने वाले खतरों की जानकारी रखने वाले अनुभवी गाईड को निश्चित रूप से पर्यटकों के साथ होना आवश्यक होता है।

नेचर ट्रेल –

इस प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से पर्यटक, जंगल में पाये जाने वाले अनेक प्रकार के वन्यजीवों तथा रहवास स्थलों के साथ ही प्रकृति में विभिन्न पहलुओं की पहचान करना प्रमुख उद्देश्य होता है। जंगलों में इस प्रकार के भ्रमण की परिधि 02 से 05 कि.मी. तक होती है। इन प्राकृतिक पगड़ंडियों पर चलने से विविधता का अहसास होता है तथा पर्यटकों को प्रकृति से जुडने का सुनहरा मौंका मिलता है।

पर्यटन क्षेत्रों में वन्य प्राणी अवलोकन –

संरक्षित वनों के रूप में अभ्यारण्य एवं राष्ट्रीय उद्यान आदि में वन्य प्राणी आसानी से देखे जा सकते हैं। मध्यप्रदेश राज्य वन संपदा का प्रमुख केन्द्र होने से यहां पर्यटन के लिए असीम संभावनाऐं है। यहां पर सभी 09 राष्ट्रीय उद्यान एवं 25 अभ्यारणों को संरक्षण प्राप्त है जिनका संचालन संबंधित प्रबंधन द्वारा व्यवस्थित रूप से किया जाता है। इन संरक्षित क्षेत्रों के अलावा भी प्रदेश के खुले वनों में भी शाकाहारी एवं मांसाहारी वन्यजीवों को देखा जा सकता है।

पक्षी विहार / नौकायन / गौताखोरी एवं राफ्टिंग गतिविधियां –

मध्यप्रदेश राज्य में वनों को संरक्षित कर प्राकृतिक रूप में या मानव निर्मित छोटे बड़े अनेक जल विहार स्थल बनाये गये हैं। जहां पर नाव चलाने के साथ ही तैराकी संबंधी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इन नदी स्थलों में जल की उपलब्धता एवं तालाबों में उपयुक्त गतिविधियां, स्थल की मांग अनुसार विकसित की जाती हैं।

ऐतिहासिक एवं पुरातत्व स्थलों का भ्रमण –

ऐतिहासिक स्थलों के रूप में पाये जाने वाले अनेक ऐसे स्मारक है जो आज जंगलों के मध्य में स्थित हैं। इन स्मारकों की स्थिति जीर्णशीर्ण हालत में है जिनका उचित प्रबंधन एवं रखरखाव कर पर्यटकों के लिए आकर्षण केन्द्र के रूप में स्थापित किया जा सकता है। इन स्थलों के अतिरिक्त भी मध्यप्रदेश में पर्यटन स्थलों के भ्रमण के लिए प्रमुख पर्यटक क्षेत्रों में कान्हा, ओरछा, खजुराहो, चित्रकूट, अमरकंटक, मांडू, बुरहानपुर, बांधवगढ़, दतिया, देवास, महेश्वर और पचमढ़ी आदि को सम्मिलित किया गया है।

ऐतिहासिक महत्व के भारतीय पर्यटन स्थलों के संबंध में पर्यटन मंत्रालय द्वारा यूनेस्को की सूची में सम्मिलित देश की 38 धरोहरों पर वर्ष 2019–20 एवं 2020–21 में पर्यटन भ्रमण संबंधित रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसका विवरण अग्रानुसार तालिका में प्रस्तुत है –

तालिका क्रमांक – 01

म.प्र. के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की स्थिति

क्रमांक	पर्यटन स्थल का नाम	पर्यटकों की गणना	
		वर्ष 2019–20	वर्ष 2020–21
1	खजुराहो	276738	90888
2	सांची के बौद्ध स्मारक	270805	46543
3	भीमबैठका	078415	36825

सोत – पत्रिका, दैनिक समाचार पत्र, दिनांक 31.03.2021 पृ.क्र. 01

उपरोक्त तालिका में मध्यप्रदेश राज्य के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर आने वाले पर्यटकों की स्थिति को दर्शाया गया है। इसी प्रकार प्रस्तुत रिपोर्ट में भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर आने वाले पर्यटकों का विवरण निम्नानुसार तालिका में दर्शाया जा रहा है –

तालिका क्रमांक – 02

भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की स्थिति

क्रमांक	पर्यटन स्थल का नाम	पर्यटकों की गणना	
		वर्ष 2019–20	वर्ष 2020–21
1	ताजमहल	5164828	1033018
2	लाल किला	2291408	188435
3	कुतुबमीनार	2306434	343733
4	अजंता गुफाएं	293401	37974
5	एलोरा गुफाएं	1280687	37974
6	फतेहपुर सीकरी	651663	94108
7	राजस्थान के किले	1087048	657470

स्रोत – भारतीय पर्यटन द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट वर्ष 2021 के अनुसार

उपरोक्त तालिका के अनुसार वर्ष 2020 में कोविड–19 कोरोना महामारी के समय पर्यटकों की संख्या में कमी रही है। जिसमें पर्यटकों की सुरक्षा एवं बचाव के अच्छे इन्तजाम करने से पुनः पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है।

पारिस्थितिकी पर्यटन – निश्कर्श एवं सुझाव

1. प्राकृतिक वातावरण को बिना हानि पहुचाए पर्यटन सुविधा के विकास कार्य किया जाना चाहिए।
2. पेड़ – पौधों को यथासंभव काटना नहीं चाहिए तथा वन्य प्राणियों एवं उनके रहवास क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।
3. पर्यटन विकास में सरल, क्षेत्र एवं स्थल की आवश्यकताओं के अनुरूप , क्षेत्रीय संसाधनों का ही तकनीकी रूप से उपयोग किया जाना चाहिए।
4. स्थल पर आवश्यक सुविधाएं जैसे ठहरने के लिए भवन आदि की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
5. पर्यटन स्थलों पर होने वाली सभी गतिविधियों से पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता दिखनी चाहिए तथा वे पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से शिक्षाप्रद होना चाहिए।
6. पर्यटकों से सौहार्द्रपूर्ण एवं सद्भावनापूर्वक व्यवहार किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ –

1. पारिस्थितिकी पर्यटन प्रबंधन, कार्य आयोजना (मध्यप्रदेश ईकोपर्यटन विकास बोर्ड भोपाल)
2. तोमर, डॉ. अतीन्द्र सिंह (पारिस्थितिकी पर्यटन, भाग–2)
3. भारतीय पर्यटन द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट वर्ष 2021
4. पत्रिका, दैनिक समाचार पत्र, दिनांक 31.03.2021 पृ.क्र. 01
5. www.mptourism.com
6. www.ecotourism.com
7. www.world-tourism.org
8. www.unesco.org
9. www.conservation.org